UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –42-45

"समसामयिक परिदृश्य में जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता"

डॉ. समता जैन
(सहा. प्राध्यापक,रेनेसां कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड मैनेजमेंट)

सारांश
किसी भी राश्ट्र के सर्वांगीण विकास में उच्च **शि**क्षा *का महत्वपूर्ण स्थान है। समसामयिक परिदृशय में वैज्ञानिक साधनों एवं तकनीकों के माध्यम से शिक्षा का स्वरूप अधिक रचनात्मक एवं रोजगारोन्मुखी होता जा रहा है। आज अधिक उदारीकरण के कारण शिक्षा के क्षेत्र में परिदृशय तेजी से बदला है। आज की पीढ़ी को न सिर्फ विविध क्षेत्रों में ज्ञान की जरूरत है, बल्कि व्यक्तित्व एवं आचरण को उन्नत करने हेतु मूल्यों की भी आवशयकता महसूस की जा रही है। इसलिए वर्तमान शिक्षा संस्थानों से हमारी अपेक्षाएँ भी बदली है। समसामयिक परिदृशय में पशिचमी संस्कृति ने मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को पतन के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। संयुक्त परिवारों की परम्परा टूटती जा रही है, इंसान ही इंसान के खून का प्यास बन बैठा है। नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट आती जा रही है। हर तरफ भ्रश्टाचार, अपराध, अनुशाासनहीनता और अर्न्तविरोध दृश्टिगोचर है। जो नैतिक एवं मानवीय मूल्य मनुश्य के ह्रदय में विराजित होते थे, वे आज अदृशय है। अतएव उच्च शिक्षा में मूल्यों के समावेशा की आवशयकता है और सदैव रहेगी।*

कुंजी *– समसामयिक, परिदृशय, सर्वांगीण, प्रांसगिक, समावेशा, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, रोजगारोन्मुखी आदि।*

भूमिका

"शिक्षा मस्तिश्क को अन्तिम तथ्य पाने योग्य बनाती है और हमें वस्तु निधि अथवा भाक्ति निधि की अपेक्षा आंतरिक ज्योति एवं प्रेम प्रदान करती है, वह सत्य को अपना बनाती है और इसे अभिव्यक्ति देती है'।

–रवीन्द्रनाथ टैगोर

मानव जीवन की विकास यात्रा में **शि**क्षा का स्थान सबसे ऊपर है तथा मानव जीवन को सार्थक व सफल बनाने में **शि**क्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। **शि**क्षा किसी भी देशा के भविश्य की बुनियाद होती है तथा उच्च शिक्षा राश्ट्रीय समृद्धि और कल्याण की कुंजी है। शिक्षा से व्यक्ति के जीवन परिवर्तन आता है तथा उसके विचारों में परिवर्तन होता है। **शि**क्षा का उसके व्यक्तित्व विकास में भी विशिाश्ट स्थान रहता है।

ऋग्वेद के अनुसार – "सच्ची **शि**क्षा मनुश्य की आत्मा को स्वतंत्र करती है। मानव को अज्ञानता, ईर्श्या और संकीर्णता से मुक्त करने का कार्य **शि**क्षा का ही है'k। दूसरे भाब्दों में, शिक्षा का मूल उद्देशय चरित्र निर्माण करना है। शिक्षा व्यवस्था किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की प्रथम अवस्था होती है। एक सर्वश्रेश्ठ शिक्षा वह होती है जो मानव के बौद्धिक विकास के साथ–साथ जीवन मूल्यों को भी विकसित करने में सहयोगी हो। ऐसा तभी संभव है जब उच्च शिक्षा में अनिवार्य पाठ्यक्रम के माध्यम से जीवन मूल्यों एवं संस्कारों का समावेशा किया जाए। शिक्षा प्रणाली में इस सकारात्मक बदलाव लाने से ही मानव मात्र के विकास के साथ–साथ समाज एवं राश्ट्र का सामाजिक, आर्थिक एवं नैतिक विकास हो सकेगा।

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार – "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सके, मनुश्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, वहीं वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है"।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –42-45

शिक्षा किसी भी देशा को सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए अनिवार्य होती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने समाज, संस्कृति और पर्यावरण को समझता है तथा उसके अनुसार ही अपने के व्यवहार का निर्धारण करता है।

इस समय देश के अंचल में, जड़ता पीड़ा कुंठायें हैं,
भाई के हनने को ही अब, भाई की उठी भुजायें हैं।
आचार–विचार अहिंसा पर, अब द्वेशदंभ का पहरा है,
निर्जीव आस्थायें लगतीं, देवत्व हो चुका बहरा हैं।

वर्तमान परिवेशा में विदेशाी संस्कृति का प्रचलन द्रुतगति से बढ़ता जा रहा है। जिससे युवा अपनी क्षमताओं का उपयोग आत्महित एवं राश्ट्रहित में नहीं कर पा रहा है, अर्थात् युवा वर्ग दिशााविहीन होता जा रहा है। सम्पूर्ण विशव में राग–द्वेश, आतंक, दुर्व्यसन, मद्यपान, माँसाहार एवं सांस्कृतिक ह्रास आदि से ग्रसित युवा रूग्ण मानसिकता का शिाकार है। आज सम्पूर्ण विशव कठिन परिस्थितियों यातनाओं की ज्वालाओं में झुलस रहा है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकृतियों का बाहुल्य है। स्थितियाँ बहुत ही प्रतिकूल है। धन और पद की लिप्सा ने मनुश्य को मनुश्य का भात्रु बना दिया है। व्यक्तिवाद एवं स्वार्थपरता के दबाव में मानवीय संवेदनाएँ और जीवन मूल्य चूर–चूर हो गए है। ऐसे विकट एवं विशम समसामयिक परिदृशय में जीवन मूल्यों का पदार्पण होना आवशयक ही नहीं अनिवार्य भी है। जीवन मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों के बिना शिक्षा बोनी सी प्रतीत होती है।

उद्देशय

1. उच्च शिक्षा के वर्तमान परिदृशय को समझना।
2. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।
3. उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता प्रतिपादित करना।

भाोध प्रविधि

भाोध आलेख में विभिन्न सन्दर्भ ग्रन्थों, भाोध आलेखों, पत्र–पत्रिकाओं एवं व्यक्तिगत साक्षात्कार आदि से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया गया है।

साहित्यिक समीक्षा

आज के भौतिकवादी युग में जब बेचारे व्यक्ति के सुनहले दिन, दो रोटियों की तलाशा में छीन ली जाती है और रूपहली रातें टीवी के रंगीन पर्दे के नाम कर दी जाती है। तब किसे फुर्सत है – सत्साहित्य पढ़ने की? ऐसे वातावरण में नैतिक मूल्यों एवं जीवन मूल्यों से उदासीन पीढ़ी को सही दिशाा निर्देशान प्रदान करने वाले, चिंतन में प्रतिक्षण आकंठ निमग्र रहने वाली, जैन वाङ्मय की विलक्षण प्रतिभा की धनी **गणिनी**

आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपनी गद्य विधाओं के माध्यम से पुराणों में छिपी अटूट सामग्री एवं जीवन मूल्यों को अपनी लेखनी से समेट कर नई पीढ़ी के सामने सहजता से प्रस्तुत किया है। आर्यिका श्री द्वारा रचित सत्साहित्य के माध्यम से निशिचत ही युवावर्ग में धर्म और संस्कृति के प्रति निश्ठा, श्रद्धा और नैतिक आस्था जागृत हो सकती है। आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी की साहित्य सर्जना सरस्वती के भण्डार की अमूल्य निधि है। आर्यिका श्री ने **उपकार, पतिव्रता, प्रतिज्ञा, जैन महाभारत, संस्कार, आटे का मुर्गा, बाहुबली, नारी आलोक (भाग1–4), सती अंजना** आदि अनगिनत बोध कथाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी के हृदय में मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों को उद्वेलित कर, पल्लवित करने की सफल चेश्टा की है। आर्यिका श्री ने इस युग की ज्वलंत मांग की पूर्ति कर नई पीढ़ी को उपदेशाों द्वारा जो पाथेय प्रदान किया है। वह साहित्य जगत् में अतुलनीय है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –42-45

डॉ. अनुराधा सिंधवानी (फरवरी 2013) के भोधपत्र में स्पश्ट उल्लेखित किया गया है, कि उच्च शिक्षा में जीवन मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। बिना जीवन मूल्य के मनुश्य का सर्वांगीण विकास असम्भव है।

भारतीय युवाओं में गिरते मूल्य (नवम्बर 2013) लेख में श्री हाशामी ने युवाओं में गिरते मूल्यों पर गहरी चिंता व्यक्त की है। वर्तमान में युवाओं के द्वारा नैतिक मूल्यों को नजरअंदाज किया जा रहा ळें

प्रोफेसर डी.एन. तिवारी (बनारस हिन्दू विशवविद्यालय) के लेख "उच्च शिक्षा में मूल्य'k में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जीवन मूल्यों की समीक्षा की गई है। उनके अनुसार उच्च शिक्षित युवाओं में जीवन मूल्य एवं शिक्षा दोनों का समावेशा होना चाहिए।

प्रोफेसर राम तकवाले ने अपने वक्तव्य में वैशवीकरण के चलते भारत की उच्च शिक्षा के सामने चुनौती एवं संभावनाओं का सटिक वर्णन किया है।

सुझाव

सम्पूर्ण विशव में भारत की पहचान उसके जीवन मूल्यों से ही है, किन्तु आज की युवा पीढ़ी में जीवन मूल्यों का दिन प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। ऐसी विशम परिस्थितियों में जीवन मूल्यों को सिखाने वाली शिक्षा की महती आवशयकता है। यदि समसामयिक परिदृशय का अवलोकन करके भी मूल्यपरक शिक्षा पर विचार नहीं किया गया तो जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता एक मृगमरीचिका ही सिद्ध होगी।

वर्तमान उदारीकरण, निजीकरण एवं वैशवीकरण के दौर में जहाँ एक ओर गलाकाट प्रतिस्पर्धा हैं वहीं दूसरी ओर युवा वर्ग में जीवन मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों की रक्षा करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों को वर्तमान व्यवसायिक संस्थाओं के लिए उपयुक्त बनाने के साथ–साथ उनके आत्मीक विकास के लिए जीवन मूल्यों का समावेशा भी अत्यन्त आवशयक है।

जीवन मूल्यों को युवाओं में सुदृढ़ता से स्थापित करने हेतु निम्नलिखित प्रयास करना प्रासंगिक है–

- प्रवेशा परिक्षाओं में नैतिक एवं जीवन मूल्यों से सम्बंधित विशयों को सम्मिलित करना चाहिए।
- उच्च शिक्षा में चयन की योग्यताओं में भौक्षणिक स्तर के साथ–साथ जीवन मूल्यों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।
- उच्च शिक्षा पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों को अन्य महत्वपूर्ण विशयों के समकक्ष समानता प्रदान करना चाहिए।
- भारत की गौरवशााली परम्पराओं को पाठ्यक्रम में भाामिल किया जाना चाहिए।
- धार्मिक एवं आध्यात्मिक परिचर्चाओं को अध्ययन में प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से भाामिल किया जाना चाहिए।
- राश्ट्रीय सेवा योजना इकाई के अन्तर्गत होने वाली गतिविधियों में छात्रों को सक्रिय भागीदारी हेतु बाध्य किया जाना चाहिए।

निश्कर्श

उच्च शिक्षा के बेहतर भविश्य एवं युवाओं के समग्र (व्यक्तित्व एवं आचरण) विकास के लिए उच्च शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन अति आवशयक है। वर्तमान दौर में उच्च शिक्षित युवाओं को प्रतिस्पर्धा में बनाए रखने हेतु, उच्च रोजगार प्राप्ति हेतु उच्च गुणवत्ता एवं प्रायोगिक शिक्षा देना प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान की जिम्मेदारी है, किन्तु युवाओं को

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. –42-45

सफल व्यवसाय, डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर, शिक्षक आदि बनाने के साथ–साथ उनमें जीवन मूल्यों को समाविश्ट करने की जिम्मेदारी भी सम्पूर्ण शिक्षा जगत् की ही है। समसमायिक परिदृशय में हमारी शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जो हानिकारक एवं विभाजक विरासत को मिलन और सहयोग की एक नई संस्कृति में बदल सके। ऐसा तभी संभव है जब हम अपनी भौक्षणिक सोच में आध्यात्मिक तत्व को, नैतिकता और चरित्र निर्माण से जुड़े पहलूओं को अधिक महत्ता प्रदान करें। आज हम ऐसे युग में है जब भविश्य हमारे सामने आकर खड़ा है और हम इस बात से अनभिज्ञ है कि भूतकाल समाप्त हो चुका है। वर्तमान चुनौतियों और परिवर्तनों का सामना करने में स्वयं को बेबस, लाचार और असहाय महसूस कर रहा है। आज मानवता एक नए समाज विशव समाज में का रूप ले रही है। जानकारी बढ़ रही है परन्तु समझदारी कम हो रही है। संघर्श और प्रतियोगिता अपने चरम पर है।

ऐसे में हमें उस मार्ग को अपनाना चाहिए जो प्रतिस्पर्धा की ओर नहीं, सहयोग की ओर ले जाता हो, अनबन की ओर नहीं, सामंजस्य की ओर ले जाता हो, भोगवाद की ओर नहीं संयम की ओर ले जाता है। अंतिम विशलेशण में, केवल मूल्योन्मुखी शिक्षा ही यह कार्य कर सकती है। अन्त में बस इतना ही –

चिन्तन की हम दिशाा बदलें, सम्यक हो व्यवहार।
समसामायिक परिदृशय में, मूल्यों पर हम करें विचार।।
प्रतिस्पर्धा के इस युग में हम, युवा में लाए शिश्टाचार।
प्रतिशाोध की ज्वाला में, न हो आचरण बेकारश।।

सन्दर्भ ग्रन्थ एवं लेख

1. भार्मनलाल सरस : गणिनी आर्यिका श्री का सरस काव्य परिचय, गणिनी आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमती अभिवन्दन ग्रन्थ, दिगम्बर जैन त्रिलोक भोध संस्थान हस्तिनापुर, 1992, पृ. 289।
2. श्रीमती रेखा जैन : गणिनी आर्यिका रत्न श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं हिन्दी साहित्य का अनुशीलन : (शाोधग्रन्थ)पृ. 145।
3. शिक्षा उत्थान : दीनानाथ बत्रा, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली।
4. सपा. डॉ. बलबीर सिंह मक्कड : उच्च शिक्षा में गुणवत्ता विकास एवं प्रबंधन, क्रिशा पब्लिकेशान, उज्जैन, फरवरी 2015।
5. समता जैन : मानवीय मूल्यों की संवाहिका : गणिनी ज्ञानमती, अर्हत् वचन (शाोध–पत्र) प्रकाशित कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर, वर्श 24 अंक, 3 जुलाई–सितम्बर 2012, पृ. 45।
6. प्रो. डी.एन. तिवारी : वेल्यू इन हायर एज्युकेशान (प्रकाशित लेख), बनारस हिन्दू विशवविद्यालय।
7. प्रो. राम तकवाले : भारत के उच्च शिक्षा में वैशवीकरण की चुनौतियां एवं सम्भावना, गोल्डन लेक्चर सिरीज यू.जी.सी.।
8. डॉ. अनुराधा सिंघवानी एवं डॉ. राजीव कुमार : वेल्यू इन हायर एज्युकेशान – नीड एण्ड इम्पोर्टेन्स, (भोधपत्र), फरवरी 2013।
9. समता जैन : समकालीन प्रमुख साध्वियों की परम्परा में गणिनी ज्ञानमती जी का साहित्य, 2014 (शाोधग्रन्थ)।